Dr. Vinod Baitha
Deptt. of Economics
Marwari College Darbhanga

व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन
BALANCE TRADE AND BALANCE OF PAYMENT.

व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन से हमारा अभिप्राय किसी देश विशेष के आयातों और निर्यातों तथा इनके मूल्य का सम्पूर्ण विवरण से होता है। व्यापार संतुलन दो या दो से अधिक देशों के बीच निश्चित समय अवधि में होने वाले आयात निर्यात के अंतर को व्यापार संतुलन Balance of Trade कहते हैं इस प्रकार दूसरे शब्दों में किसी देश के कुल निर्यातों में से उसी देश के कुल आयातों के योग को घटा देने के बाद जो अंतर आता है उसे व्यापार संतुलन की संज्ञा दी जाती है। यह अंतर किसी वर्ष विशेष की स्थिति को बताता है व्यापार संतुलन में केवल दृश्य Visible निर्यात और आयात मद ही शामिल किए जाते हैं। दृश्य आयात निर्यात मदों से हमारा तात्पर्य ऐसे मदों से है। जिनका बंदरगाहों पर लेखा जोखा रहता है।

इस तरह व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन दो या दो से अधिक देशों के बीच निश्चित अवधि में आयात और निर्यात के अंतर को व्यापार संतुलन कहते हैं व्यापार संतुलन की परिभाषा प्रोफेसर अर्थशास्त्री बेनहम द्वारा इस प्रकार दी गयी है प्रो० बेनहम का मत यह है कि " एक देश का व्यापार संतुलन वह संबंध है जो एक निश्चित अवधि में उसके आयात और निर्यात के बीच होता है।"

अर्थशास्त्री डब्लु एम स्केमैल (W.M. Scammell) के अनुसार "व्यापार संतुलन किसी देश के निवासियों द्वारा दूसरे देश के निवासियों के बीच बेची वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य तथा उस देश के निवासियों द्वारा अन्य देश के निवासियों से खरीदी गयी वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य का अंतर होता है।"

उपर्युक्त अर्थशास्त्रियों के मतों के अनुसार हम कह सकते हैं कि दृश्य वस्तुओं के आयात निर्यात का अंतर ही किसी देश का व्यापार संतुलन होता है।

व्यापार संतुलन से हमारा अभिप्राय किसी देश विशेष के आयातों और निर्यातों तथा उसके मूल्य के सम्पूर्ण विवरण से होता है। इसमें एक ओर निर्यात और उसके मूल्य का सम्पूर्ण ब्यौरा होता है। तथा दूसरी ओर आयात तथा उसके मूल्य का सम्पूर्ण ब्यौरा होता है एक तरफ उन मदों को दिखाया जाता है जिसपर विदेशियों से भुगतान प्राप्त होता है तथा उसके दूसरी ओर उन मदों को दिखाया जाता है, जिनके लिए

Scanned by CamScanner

विदेशियों को भुगतान किए जाते हैं। दोनों राशियों के कुल अंतर को भुगतान संतुलन Balance of Payment कहते हैं।

भुगतान संतुलन एक देश के द्वारा अन्य देशों को किए जाने वाला कुल भुगतानों एवं अन्य सभी देशों से होने वाली कुल प्राप्तियों के सम्बंध को दर्शाता है। अन्य शब्दों में एक देश के लोगों के अन्य सभी देशों के लोगों के साथ निर्दिष्ट अवधि में हुए सभी आर्थिक सौदों में लेखे-जोखों को भुगतान संतुलन कहते हैं। इसके द्वारा visible वस्तुओं के आयात-निर्यात के अतिरिक्त अदृश्य Invisible मदों के आयात-निर्यात मदों को भी सम्मिलित किया जाता है। अदृश्य मदों के आयात-निर्यात से तात्पर्य उन मदों से है जो बंदरगाहों में रखे रजिस्टर में दर्ज नहीं होते। अदृश्य मदों में प्रमुख रूप से पूँजी का आदान-प्रदान, ब्याज का भुगतान या प्राप्ति, बैंक बीमा एवं जहाज रानी सेवाएँ तथा विशेषज्ञों का आवागमन आदि सम्मिलित होते हैं। इस तरह भुगतान संतुलन एक देश का दूसरे देश के साथ एक निश्चित अवधि में किए गए आर्थिक लेन-देन या प्राप्तियों Receipts व भुगतानों payment का विवरण होता है।

इस प्रकार भुगतान संतुलन की परिभाषा अनेक अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग से दी है।

अर्थशास्त्री बेनहम के अनुसार - "एक देश का भुगतान संतुलन एक निश्चित अवधि के लिए उसका बाकी विश्व के साथ मौद्रिक सौदों का लेखा होता है।"

अर्थशास्त्रियों में वाल्टर क्रोस Walter Crause के अनुसार "भुगतान संतुलन किसी देश के निवासियों एवं बाकी विश्व के निवासियों के बीच, किसी समय विशेष सामान्य रूप से एक वर्ष में सम्पूर्ण किये गए समस्त आर्थिक सौदों का एक व्यवस्थित विवेचनात्मक विवरण है।"

अर्थशास्त्री पी॰ टी॰ एल्सवर्थ P.T. Ellsworth के अनुसार "भुगतान संतुलन एक देश के निवासियों और बाकी विश्व के बीच किये गए समस्त लेन-देनों का एक सारांश विवरण है। यह दिये हुए समय को सम्मिलित करता है। जो सामान्य रूप से एक वर्ष होता है"

इस प्रकार अनेक अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग से भुगतान संतुलन की परिभाषा दी है सामान्यतः भुगतान संतुलन एक वर्ष की अवधि में किए गए व्यापार के संदर्भ में लेन-देन का हिसाब है जिसे भुगतान संतुलन कहा जाता है। P.T.O

Scanned by CamScanner

भुगतान संतुलन की विशेषताएँ

भुगतान संतुलन की विशेषताएँ निम्नलिखित है।

1. क्रमबद्ध लेखा रिकार्ड — भुगतान संतुलन की विशेषता यह है कि इसका लेखा-जोखा का रिकार्ड को क्रमबद्ध रखा जाता है जिसे यह एक देश का अन्य देशों के साथ किये गए आदान-प्रदानों संबंधित भुगतानों एवं प्राप्तियों का क्रमबद्ध लेखा होता है। जिसे भी आवश्यकता हो उसका अवलोकन किया जा सके।

2. निश्चित समय अवधि — भुगतान संतुलन एक निश्चित समय अवधि में किये गये एक वर्ष का लेखा जोखा होता है

3. व्यापकता — भुगतान संतुलन की व्यापकता में सभी प्रमा के दृश्य, अदृश्य एवं पूंजी अंतरण को मदों में शामिल किया जाता है।

4. स्व: संतुलित — भुगतान संतुलन में दोहरी लेखांकन प्रणाली, लेखा दृष्टिकोण स्वत: ही लेखे को संतुलन में रखती है इसमें दोहरी लेखांकन का विशेष योगदान रहता है

5. दोहरी अंकन प्रणाली - भुगतान संतुलन में "दोहरी अंकन प्रणाली का विशेष महत्व है। दोहरी लेखा अंकन प्रणाली के आधार पर ही भुगतान एवं प्राप्तियों को लेखा बद्ध किया जाता है।

6. अन्तर समायोजन — भुगतान संतुलन में वास्तविक व्यवहारों में जब कभी कुल प्राप्तियों एवं भुगतानों में अंतर हो जाता है तो इनको समायोजित करने की आवश्यकता पड़ती है।

इस प्रकार भुगतान संतुलन की अनेक विशेषताएँ हैं जो भुगतान संतुलन को बनाए रखने में आवश्यक भूमिका निभाती है।

व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन में अन्तर

व्यापार संतुलन में दो या दो से अधिक देशों के बीच निश्चित समयावधि में होने वाले आयात-निर्यात के अंतर को व्यापार संतुलन कहा जाता है। किसी देश के कुल निर्यातों के मूल्य में से उसी देश के कुल के कुल मूल्य को घटा देने के बाद जो अंतर आता है उसे भुगतान संतुलन की संज्ञा दी जाती है। P.T.O

Scanned by CamScanner

यह अंतर किसी एक वर्ष या वर्ष विशेष स्थिति को बताता है। व्यापार संतुलन में दृश्य Visible निर्यात एवं आयात मद ही शामिल किए जाते हैं। दृश्य निर्यात आयात मदों से हमारा तात्पर्य ऐसे मदों से है, जिनका बंदरगाहों पर लेखा जोखा रहता हो। व्यापार संतुलन एवं भुगतान संतुलन में यह अंतर है।

विस्तार भुगतान व्यापार संतुलन की तुलना में अधिक विस्तृत है व्यापार संतुलन व्यापार संतुलन का एक भाग है जबकि व्यापार संतुलन का विस्तृत शब्द है।

इसमें दृश्य एवं अदृश्य सभी प्रकार की मदों को शामिल किया जाता है। जबकि व्यापार संतुलन में केवल दृश्य मदें ही शामिल की जाती है अर्थात केवल वस्तुओं के आयात-निर्यात ही शामिल किया जाता है।

भुगतान संतुलन किसी देश की भुगतान स्थिति का सम्पूर्ण विश्लेषण है इसमें विदेशी विनिमय की सम्पूर्ण मांग व पूर्ति का विश्लेषण किया जाता है जबकि व्यापार संतुलन में केवल भुगतान स्थिति का आंशिक विश्लेषण है।

भुगतान संतुलन सदैव संतुलित रहता है दोहरी लेखा प्रणाली के कारण इसका खाता सदैव संतुलित रहता है जबकि व्यापार संतुलन में इसे साम्य में रहना आवश्यक नहीं है यह अनुकूल या प्रतिकूल दोनों ही हो सकता है।

भुगतान संतुलन इसका आर्थिक विश्लेषण व निर्णयों में अधिक उपयोग होता है जबकि व्यापार संतुलन में इसका आर्थिक विश्लेषण निर्णयों में कम उपयोग होता है।

भुगतान संतुलन पक्ष में होने पर वह सुदृढ़ अर्थव्यवस्था का परिचायक है जबकि व्यापार संतुलन पक्ष में होने पर भी यह आवश्यक नहीं है कि अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हो।

विनिमय दर का निर्धारण भुगतान संतुलन पर निर्भर करता है ~~क्योंकि यह~~ विदेशी मुद्रा की कुल मांग और कुल पूर्ति का ब्यौरा है जबकि व्यापार संतुलन अपूर्ण ब्यौरा है। यह विनिमय दर को प्रभावित करता है. विनिमय दर का निर्धारण नहीं करता है।

इस प्रकार भुगतान संतुलन तथा व्यापार संतुलन में व्यापक अंतर हो फिर भी यह सभी देशों के लिए आवश्यक हो।